रजिस्ट्री सं० डी-(डी)-72 REGISTERED No. D-(D)-72

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 4] नई दिल्ली, शुक्रवार, जनवरी 3, 1975/पौष 13, 1896

No. 4] NEW DELHI, FRIDAY, JANUARY 3, 1975/PAUSA 13, 1896

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

RESOLUTION

New Delhi, the 3rd January, 1975

No. 3/1/75-Public.—The tragic death of Shri Lalit Narayan Mishra on the 3rd January, 1975 has deprived the country of a dedicated freedom fighter, an able administrator and a distinguished Parliamentarian with a long record of service to the country.

2. Shri Lalit Narayan Mishra was born in District Muzaffarpur, Bihar on 2nd February, 1923. He was educated at Central Hindu College, Banaras, and also at Patna College, Patna. Shri Mishra started participation in the freedom struggle from an early age and underwent two terms of imprisonment in 1941 and 1942 with five years rigorous imprisonment. He was Secretary of the Bihar Provincial Students' Congress 1944—46 and its President in 1946—48. He was also Fellow of the Patna University Senate during 1948-49 and organised the first Bihar Economic Conference at Patna in 1950. Shri Mishra, from the beginning, was interested in the economic development of the country and did research work on jute cultivation and conducted food survey in Bihar. As a research scholar of Patna University, he did extensive research work on the "19th Century Colonial Policy of the British Empire". He was a member of the All India Congress Committee from 1950. He was a delegate to the 42nd Session of the International Labour Conference, Geneva, in 1958 and visited the

United States of America in 1961 to study industrial relations in the coal and steel industries He was Chairman, National Projects Construction Corporation Limited, 1962—64. Shri Mishra was closely associated with the trade union movement and was editor of the "Congress Forum". He was a member of the Congress Working Committee, 1972. He attended as India's representative several international conferences including the General Body Session of the ILO held in Geneva in 1967 and led the Indian delegation to the 2nd UNCTAD Conference held in Santiago and the meetings of the U. N. Economic Commission for Asia and the Far East held at Bangkok and Manila. He was the guiding spirit behind the Third Asian Trade Fair organised as Asia '72. Shri Mishra was elected to the First Lok Sabha in 1952 and to the Second Lok Sabha in 1957. During 1964—72 he was a member of the Rajya Sabha. In 1972 he was again elected to the Lok Sabha from Darbhanga. He was Parliamentary Secretary to the Minister of Planning, Labour and Employment 1957—60, and Deputy Minister for Labour, Employment and Planning, 1960—62. Shri Mishra was also Deputy Minister in the Ministries of Home Affairs and Finance during 1964—67. In 1967 he took over as Minister of State for Labour and Rehabilitation and later Minister of Defence Production. Shri Mishra became Minister of Foreign Trade in 1970. He became a member of the Union Cabinet on appointment as Minister of Railways on February 5, 1973. Shri Mishra is survived by his wife, four sons, and two daughters.

N. K. MUKARJI, Secy.

गृह मंत्रालय

संकल्प

नई दिल्ली, 3 जनवरी, 1975

सं० 3/1/75-पब्लिक.—श्री ललित नारायण मिश्र की 3 जनवरी, 1975 को हुई दुःखद मृत्यु ने देश से एक निष्ठावान स्वतन्त्रता सेनानी, एक सुयोग्य प्रशासक और एक ऐसा विशिष्ट संसदविद छीन लिया है जिनका देश-सेवा का सुदीर्घ इतिहास रहा है ।

2. श्री ललित नारायण मिश्र का जन्म बिहार में जिला मुजफ्फरपुर में दिनांक 2-2-1923 को हुआ था । उनकी शिक्षा सेंट्रल हिन्दू कालेज, बनारस और पटना कालेज, पटना में हुई । श्री मिश्र ने अपनी बाल्यावस्था से ही स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेना आरम्भ कर दिया था और वे सन् 1941 और सन 1942 में जेल गए; उन्हें तब पांच वर्ष का कठोर कारावास दिया गया था । वे बिहार प्रांतीय विद्यार्थी कांग्रेस के सन् 1944-46 में मंत्री रहे और सन् 1946-48 में अध्यक्ष रहे । वे सन् 1948-49 में पटना विश्वविद्यालय सेनेट के फेलो भी रहे और उन्होंने सन् 1950 में पटना में पहले बिहार आर्थिक सम्मेलन का भी आयोजन किया । श्री मिश्र की आरंभ से ही देश के आर्थिक विकास मे चि थी और उन्होने पटसन की खेती के विषय में अनुसंधान-कार्य किया और बिहार में खाद्य-सर्वेक्षण किया । उन्होंने पटना विश्वविद्यालय के शोध छात्र के रूप में "ब्रिटिश साम्राज्य की 19वीं शताब्दी की उपनिवेशवादी नीति" विषय पर व्यापक अनुसंधान-कार्य किया । वे सन् 1950 से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे । वे सन् 1958 में जेनेवा में हुए अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन के 42वें अधिवेशन के लिए शिष्ट मंडल के सदस्य थे और उन्होंने कोयले और इस्पात उद्योगो में औद्योगिक संबंधों का अध्ययन करने के लिए सन् 1961 में संयुक्त राज्य अमरीका की यात्रा की । वे सन् 1962-64 में राष्ट्रीय परियोजना निर्माण निगम लिमिटेड के अध्यक्ष रहे । श्री मिश्र का श्रमिक संघ आंदोलन से बहुत घनिष्ट संबंध रहा और वे "कांग्रेस फोरम" के संपादक रहे । वे सन् 1972 में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के सदस्य रहे । उन्होंने भारत के प्रतिनिधि के रूप में अनेक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों मे भाग लिया, जिसमें सन्

1967 में जेनेवा में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की सामान्य सभा का अधिवेशन भी शामिल है; उन्होंने सेंटियागो में हुए दूसरे अंकटाड सम्मेलन मे और एशिया और सुदूरपूर्व के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक आयोग की बैंकाक तथा मनीला में हुई बैठकों में भारतीय शिष्ट मडल का नेतृत्व किया। वे ही एशिया ' 72 के रूप में आयोजित तीसरे एशियाई व्यापार मेले की प्रेरक शक्ति थे। श्री मिश्र सन 1952 में पहली लोक सभा के लिए और सन् 1957 मे दूसरी लोक सभा के लिए चुने गए थे। वे सन् 1964–72 की अवधि में राज्य सभा के सदस्य रहे। वे सन् 1972 में दरभंगा से लोक सभा के लिए फिर से चुने गए। वे सन् 1957–60 में योजना, श्रम और रोजगार मंत्री के संसदीय सचिव रहे, और सन् 1960–62 में श्रम, रोजगार और योजना उप मंत्री रहे। श्री मिश्र सन 1964–67 में गृह मंत्रालय और वित्त मंत्रालय में भी उप मंत्री रहे। उन्होंने सन् 1967 में श्रम और पुनर्वास राज्यमंत्री का और बाद में रक्षा उत्पादन मंत्री का पद संभाला। श्री मिश्र सन् 1970 में विदेश व्यापार मंत्री बने। 5 फरवरी, 1973 को रेल मंत्री के रूप में नियुक्त होने पर वे केन्द्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य बने। श्री मिश्र अपने पीछे अपनी पत्नी, चार पुत्र और दो पुत्रियां छोड गए है।

नि० मुकर्जी, सचिव।

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS MINTO ROAD, NEW DELHI AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1975